9 मैं सड़क हूँ

जी हाँ ! मैं सड़क हूँ। मिट्टी, पत्थर और डामर से बनी। एक बड़े अजगर की तरह मैदानों, जंगलों और पहाड़ों के बीच से गुजरती हूँ। पेड़ों की छाया के नीचे से होकर मैदानों को पार करती हुई, गाँवों को शहरों से जोड़ती हूँ। जब आदमी ने एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने की बात सोची होगी। मैं कहीं कच्ची हूँ तो कहीं पक्की। कहीं मैं घुमावदार बनी तो कहीं एकदम सीधी–सपाट। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, महल झोंपड़ी, बाग–बगीचे, हाट–बाजार और भी न जाने कहाँ–कहाँ मेरी पहुँच है।

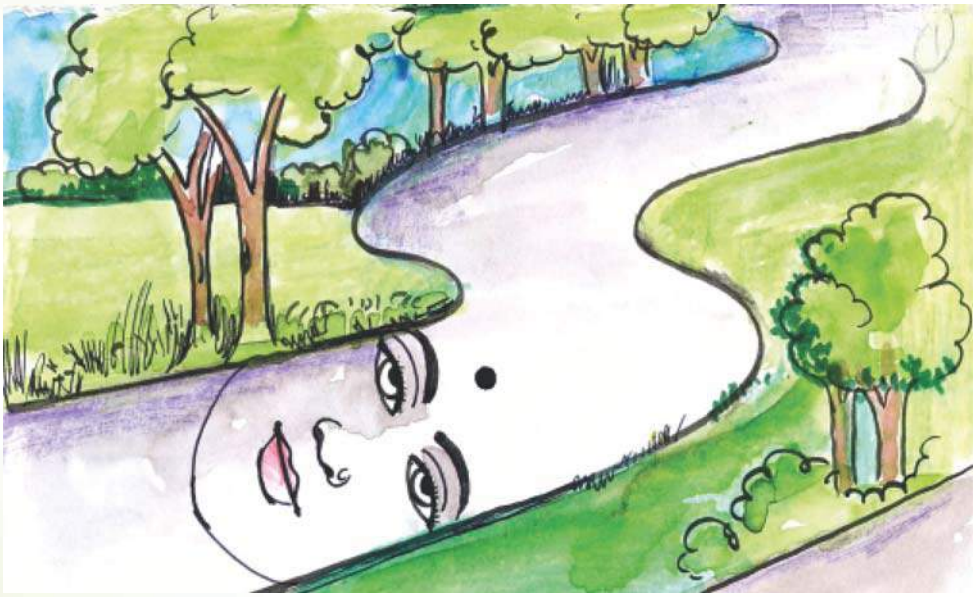

लोग कहते हैं कि गाँव के पास होकर गुजरते समय मैं उसके विकास का हिस्सा बन जाती हूँ। सच पूछो तो मुझे विभिन्न ऋतुओं में तरह – तरह की फसलों से हरे–भरे खेत बहुत सुंदर लगते हैं। गाय, भैंस, बैलों के झुंड जब मेरे ऊपर से गुजरते हैं तो मैं अपना दुख–दर्द भूल जाती हूँ। मेरे बाजू में खड़े हरे–भरे पेड़ों की छाया मुझे बहुत अच्छी लगती है।

गर्मी के दिनों में पैदल चलने वालों को भी इनकी छाया में आराम मिलता है। मेरे किनारे पर लगे आम, जामुन जैसे फलदार पेड़ लोगों को आनंद देते हैं। बच्चे तो उनकी ओर दौड़े चले जाते हैं। खेलते–कूदते, फलों को आपस में बाँटकर खाते हुए बच्चों को देखकर मुझे कितनी खुशी होती है, क्या बताऊँ।

दशहरा, ईद आदि त्योहारों और मेले से मेरी शोभा बढ़ जाती है। मेरे आस–पास सफ़ाई हो जाती है। दोनों किनारों पर रोशनी की जाती है। तरह–तरह की दुकानों से मैं सज जाती हूँ। काफी चहल–पहल होती है। सभी लोग खुश नज़र आते हैं। मुझे अच्छा लगता है, अपने नज़दीक यह रौनक देखकर।

दुख तब होता है जब मेरे ऊपर कूड़ा–करकट फेंक दिया जाता है। अरे! अरे! देखो कितने लोगों ने मुझ पर थूका भी है।

केला खाकर छिलका भी मुझ पर फेंक दिया है। कई जगह मुझ पर छोटे–छोटे गड्ढे बन जाते हैं, जिससे मुझे ही नहीं, लोगों को भी परेशानी होती है।

मैंने अपने ऊपर कभी लोगों के थके–हारे कदमों की आहट सुनी है, तो कभी तेज़ी से चलते हुए उत्साहित कदमों की धमक। हाँ कभी–कभी तो ऐसी दुर्घटना हो जाती है कि लोगों की मौत तक हो जाती है। तब मुझे दुख होता है, क्योंकि मैं उनकी कोई मदद नहीं कर पाती। यदि लोग मेरे किनारे लगे संकेत चिह्नों का पालन करें तो दुर्घटनाओं से बचा जा सकता है।

चाहे जो भी मेरे ऊपर होकर गुज़रे, मैं सबके सुख–दुख में उनके

साथ शामिल हो लेती हूँ। मैं कोशिश करती हूँ कि सब लोगों को उनकी मंज़िल तक पहुँचा सकूँ। चलते रहो, चलते रहो–यही मैं कहना चाहती हूँ। सुख और दुख तो जीवन में आते–जाते रहते हैं, पर हमें उसकी परवाह न करते हुए चलते रहना चाहिए। सुनो–सुनो! अभी–अभी मेरे ऊपर होकर एक गाड़ी गुज़री है। क्या तुमने भी उसमें बजता हुआ गाना सुना है –

''रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के .....!!!''

अभ्यास कार्य

शब्द –अर्थ

शोभा	–	सुंदरता
दुर्घटना	–	बुरी घटना
निर्दोष	–	जिसका कोई दोष न हो
इतिहास	–	पुरानी घटनाओं का विवरण
फलदार	–	फलों से युक्त
उत्साहित	–	जोश से भरा हुआ
घुमावदार	–	जिसमें बार–बार घुमाव आए
धमक	–	भारी आवाज

उच्चारण के लिए

महल, झोंपड़ी, हाट–बाजार, कूड़ा–करकट, मंजिल

सोचें और बताएँ

1. सड़क कैसी दिखाई देती है ?
2. सड़क पर केले के छिलके फेंकने से क्या हो सकता है ?
3. आपने सड़क के किनारे लगे कौन–कौनसे पेड़ देखे हैं ?
4. सड़क के किनारे रौनक कब–कब बढ़ जाती है ?

लिखें

1. कोष्ठक में सही गलत का निशान लगाएँ

सड़क पर हमेशा–

- बायीं ओर चलना चाहिए। ( )
- वाहन तेज गति से चलाना चाहिए। ( )

- कचरा फेंक देना चाहिए। ( )
- संकेतों को ध्यान में रखकर वाहन चलाना चाहिए। ( )
- सड़क पार करते समय पहले बायीं फिर दायीं ओर देखना चाहिए। ( )

2. यदि सड़क बोल सकती तो वह इनसे क्या कहती ?
   - अपने ऊपर कूड़ा फेंकने वालो से।
   - गर्मी में शीतल छाया देने वालो से।
   - अपने ऊपर नाली का पानी छोड़ने वालो से
   - अपने ऊपर बने गड्ढों को मिट्टी–गिट्टी से भरने वालों से।
3. सड़क का जन्म क्यों हुआ होगा ?
4. हम सड़क से होकर कहाँ–कहाँ जाते हैं ?
5. सड़क को कौन–कौनसी बातें बुरी लगती है और क्यों ?
6. सड़क के किनारों पर रोशनी कब की जाती है ?

सुनें और लिखें। (श्रुतलेख)

शिक्षक/शिक्षिका श्रुतलेख लिखाने का तरीका बताएँ। एक अनुच्छेद का श्रुतलेख लिखवाएँ। गद्यांश को पूरा पढ़कर सुनाएँ, जिससे बच्चे संदर्भ से परिचित हो जाएँ। तब लिखने के लिए वाक्यांशों को तीन– तीन बार बोलें। गद्यांश पूरा होने पर एक बार पुनः पढ़ें, ताकि कोई संशोधन करना हो, तो किया जा सके।.

(इसके बाद एक छात्र/छात्रा पाठ के एक अनुच्छेद को बताए अनुसार बोलें। शेष छात्र/छात्रा उसे लिखें। बाद में अभ्यास पुस्तिकाएँ जँचवा लें।

भाषा की बात

- मेरे आस–पास सफाई हो जाती है।
- दोनों किनारों पर रोशनी की जाती है।

ऊपर दो बातें कही गई हैं। हर बात के पूरी होने पर एक चिह्न। लगाया गया है ' । ' इसे 'पूर्ण विराम' कहते हैं।

- निम्न वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम लगाएँ।

(क) मैं सड़क हूँ मिट्टी और पत्थर से बनी हूँ

(ख) उत्सवों के समय मैं तरह–तरह की दुकानों से सज जाती हूँ मुझ पर काफी चहल–पहल होती है

- काली सड़के, बड़े गड्ढे, इनमें 'काली' और 'बड़े' शब्द सड़क और गड्ढे की विशेषता बता रहे हैं। विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण लगाकर तुम भी नये शब्द लिखो–

मीठा गुड़	सुंदर गुड़िया
.....	.....
.....	.....
.....	.....

यह भी करें–

नीचे कुछ विषय लिखे हैं। इनमें से अपने मनपसंद विषय पर कुछ वाक्य बोलो और लिखो।

- मैं नदी हूँ।
- मैं किताब हूँ।
- मैं आम हूँ।
- मैं बगीचा हूँ।

जैसे – मैं आम हूँ। मुझे फलों का राजा कहते हैं।

इस दृश्य को ध्यान से देखें और इस पर आधारित वाक्य लिखें।

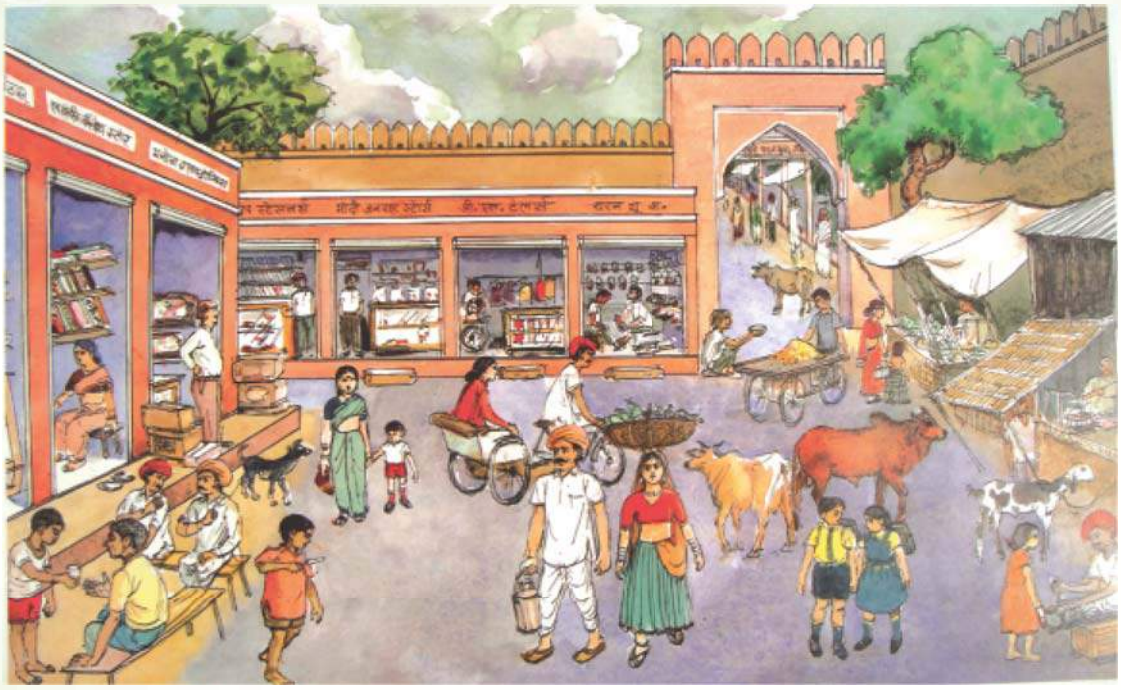

.....

.....

.....

.....

इन्हें भी जानो ।

हॉर्न न बजाएँ

खड़ी चढ़ाई है।

बायीं ओर विकट मोड़ है,
धीरे चलें।

दायीं ओर विकट मोड़ है।
धीरे चलें।

आगे स्कूल है। धीरे चलें।

गति सीमा 50 कि.मी. प्रतिघंटा रखें।

वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें।

संकेत

केवल पढ़ने के लिए

कंजूस सेठ

एक था सेठ। एक दिन उसको नारियल की जरूरत पड़ गई। वह नारियल लेने बाजार पहुँचा। उसने दुकानदार से पूछा– "एक नारियल कितने का है।" दुकानदार बोला –"एक रुपये का।" सेठ बोला – "एक रुपये में दो, दे दो ना।" दुकानदार बोला –"आगे मिलेंगे।"

सेठ आगे गया, वहाँ एक रुपये में दो नारियल मिल रहे थे। सेठ बोला – "एक रुपये में चार दे दो न।"

दूसरा दुकानदार बोला –"आगे मिलेंगे।"

सेठ आगे गया, वहाँ एक रुपये में चार नारियल मिल रहे थे।

सेठ बोला – "एक रुपये में आठ दे दो न।"

तीसरा दुकानदार बोला –"आगे नारियल का पेड़ है ,वहीं से तोड़ लाओ। कुछ भी नहीं देना पड़ेगा।"

सेठ पेड़ के पास पहुँचा। उसने पेड़ से कभी नारियल नहीं तोड़े थे। सेठ पेड़ पर चढ़ गया। खूब नारियल तोड़ लिए, लेकिन जब उतरने की सोची तो डर लगने लगा। इतने ऊँचे पेड़ से कैसे उतरूँ। बस; सेठ पेड़ पर लटके–लटके ही चिल्लाने लगा–"मुझे बचाओ, मुझे बचाओ। बचाने वाले को दो हजार रुपये दूँगा।"

सेठ कब तक लटका रहा होगा, वह कैसे उतरा होगा ? कहानी आगे बढ़ाओ और अपने साथियों को सुनाओ।